विवाहोत्सव

बनी वृषभानु नंदिनी आजु ।
भूषन वसन विविध पहिरे तन, पिय मोंहन हित साजु ॥
हाव भाव लावन्य भृकुटि लट, हरति जुवति जन पाजु ॥
ताल भेद औघर सुर सूचत, नूपुर किंकिनि बाजु ॥
नव निकुंज अभिराम स्याम सँग, नीकौ बन्यौ समाजु ।
(जै श्री ) हित हरिवंश विलास रास जुत, जोरि अविचल राजु
।48 ॥

खेलत रास दुलहिनी दूलहु।

सुनहु न सखी सहित ललितादिक, निरखि निरखि नैंननि किन फूलहु॥
अति कल मधुर महा मोंहन धुनि, उपजत हंस सुता कैं कूलहु।
थेई थेई वचन मिथुन मुख निसरत, सुनि सुनि देह दसा किन भुलहु॥
मृदु पदन्यास उठत कुमकुम रज, अद्भूत बहत समीर दुकूलहु।
कबहुँ स्याम स्यामा दसनांचल, कच कुच हार छुवत भुज मूलहु॥
अति लावन्य, रूप, अभिनय, गुन, नाहिंन कोटि काम समतूलहु।
भृकुटि विलास हास रस वरषत, (जै श्री) हित हरिवंश प्रेम रस झूलहु

॥62॥

सखियनि कैं उर ऐसी आई । व्याह विनोद रचैं सुखदाई ॥
यहै बात सबकैं मन भाई । आनंद मोद बढ्यौ अधिकाई ॥
बढ्यौ आनंद मोद सबकैं, महा प्रेम सुरंग रंगी।
और कछु न सुहाइ तिनकौं, जुगल-सेवा-सुख पगी ॥
निशि-द्यौस जानत नाहिं सजनी, एक रस भीजी रहैं।
गोप-गोपिनु आदि दुर्लभ, तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं ॥

ये नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दूलह लालबिहारी॥
रंगभीने दोउ प्राननि प्यारे । नव-सत अंगनि-अंग सिंगारे ॥
नवसत सिंगारे अंग-अंगनि, झलक तन की अति बढ़ी।
मौर-मौरी सीस सोहैं, मैंन-पानिप मुख चढ़ी॥
जलज-सुमन सु सेहरे रचि, रतन- हीरे जगमगैं।
देखि अद्भुत रूप मनमथ, कोटि रति पाँयन लगैं॥

शोभा मंडप कुंजनि द्वारैं। हित की बाँधी वन्दनवारे॥
कुमकुम सौं लै अजिर लिपायौ । अद्भुत मोतिनु चौक पुरायौ।
पुराइ अद्भुत चौक मोतिनु, चित्र रचना बहु करी।
आइ दोउ ठाड़े भये तहाँ, सबनि की गति मति हरी ॥
सुरंग मेंहदी रंग राचे, चरन कर अति राजहीं।
विविध रागिनि किंकिनी अरु, मधुर नूपुर बाजहीं ॥

वेदी सेज सुदेस सुहाई । मन-दृग अंचल ग्रन्थि जुराई।
रीति भाँति विधि उचित बनाई। नेह की देवी तहाँ पुजाई ॥
पूजि देवी नेह की दोउ, रति-विनोद बिहारहीं।
तिहि समैं सखि ललितादि हित सौं, हेरि प्राननि वारहीं॥
एक वैस सुभाव एकै, सहज जोरी सोहनी ।
एक डोरी प्रेम की "ध्रुव" बंधे मोहनमोहनी॥

श्रीवृन्दावन धाम रसिक मन मोहहीं।
दूलह दुलहिनि व्याह सहज तहाँ सोहहीं ॥1॥
नित्य सहाने पट अरु भूषन साजहीं।
नित्य नवल सम वैस एक रस राजहीं ॥2॥
शोभा कौ सिर मौर चन्द्रिका मोर की।
वरनी न जाइ कछू छबि नवल किशोर की ॥3॥
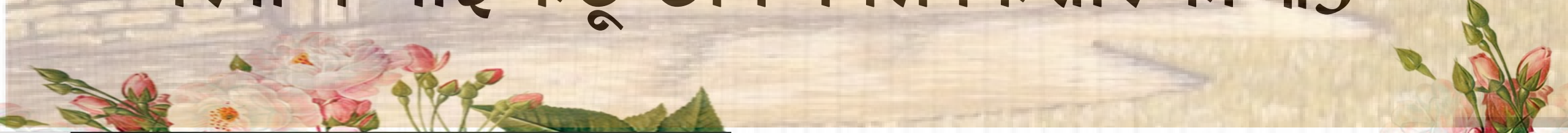
सुभग माँग रँग रेख मनौं अनुराग की ।
झलकत मौरी सीस सुरंग सुहाग की ॥ 4 ॥
मणिनु खचित नव कुंज रही जगमग जहाँ ।
छबि कौ बन्यौ वितान सोई मंडप तहाँ ॥ 5 ॥
वेदी - सेज सुदेश रची अति बानिकैं ।
भाँति-भाँति के फूल सुरंग बहु आनिकैं ॥ 6 ॥

गावत मोर-मराल सुहाये गीत री।
सहचरि भरीं आनन्द करत रसरीति री ॥7 ॥
अलबेले सुकुमार फिरत तिहि ठाँव री।
दृग-अंचल परी ग्रन्थि लेत मन भाँवरी ॥8 ॥
कँगना प्रेम अनूप कबहुँ नहिं छूटहीं।
पोयौ डोरी रूप सहज सो न टूटहीं ॥ 9 ॥

रचि रहे कोमल कर अरु चरन सुरंग री।
सहज छबीले कुँवर निपुन सब अंग री ॥10॥
नूपुर कंकन किंकिनि बाजे बाजहीं।
निर्त्तत कोटि अनंग- नारि सब लाजहीं ॥ 11 ॥
बाढ्यौ है मन माँहिं अधिक आनन्द री।
फूले फिरत किशोर वृन्दावन चन्द री ॥12॥

सखियन किये बहु चार अनेक विनोद री।
दूधाभाती हेत बढ्यौ मन मोद री ॥13 ॥
ललित लाल की बात जबहि सखियन कही।
लाज सहित सुकुमारि ओट पट दै रही ॥14 ॥
नमित ग्रीव छवि-सींव कुंवरि नहिं बोलहीं।
बुधि बल करत उपाय घूंघट पट खोलहीं ॥15 ॥

कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी।
हँसत सखी सुख हेरि सहज शोभा घनी ॥16॥
वाम चरन सौं सीस लाल कौ लावहीं।
पानी वारि कुँवरि पर पियहिं पिवावहीं ॥17॥
मेलि सुगन्ध उगार सो वीरी खवावहीं।
समुझि कुँवर मुसिकाइ अधिक सुख पावहीं ॥18॥

और हास परिहास रहसि रस रंग रह्यो ।
नित्यविहार- विनोद यथामति कछु कह्यो ॥19॥
अंचल ओटि असीस सखी सब दैंहि री ।
पल-पल बढ़ौ सुहाग नैंन सुख लैंहि री ॥20॥
जैसे नवल विलास नवल-नवला करैं ।
मन-मन की रुचि जानि नेह-विधि अनुसरैं ॥ 21 ॥

बैठी हैं निजु कुंज कुंवरि मन मोहनी ।
झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी ॥22॥
चाहि-चाहि सो रूप रसिक सिरमौर री ।
भरि आये दोउ नैंन भई गति और री ॥ 23 ॥
अति आनंद कौ मोद न उरहिं समात री ।
रीझि-रीझि रस भींजि आपु बलि जात री ।

अरुझे मन अरु नैंन बढ्यौ अनुराग री ।
एक प्रान द्वै देह नागर अरु नागरी ॥25॥
यौं राजत दोउ प्रीतम हँसि मुसिकात री ।
निरखि परस्पर रूप न कबहु अघात री ॥ 26 ॥
तिनहीं के सुख रंग सखी दिन रँगमगीं ।
और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं ॥27॥

उभय रूप रस सिन्धु मगन जहाँ सब भये ।
दुर्लभ श्रीपति आदि सोइ सुख दिन नये ॥28॥
श्रीहितध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावहीं।
सर्वोपरि सोई होइ प्रेम रस पावहीं ॥29॥

लाड़ी जू थारौ, अविचल रहौ जी सुहाग।
अलकलड़े रिझवार छैल सौं, नित नव बढ़ौ अनुराग ॥
यौं नित बिहरौ ललितादिक सँग, वृन्दावन निजु बाग ।
जय श्रीरूप अली हित जुगल-नेह लखि,
मानत निजु बड़भाग।